नालंदा महाविहार
या
नालंदा विश्वविद्यालय

प्रो. (डॉ.) सुरेन्द्र कुमार
प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष-इतिहास
पटना विश्वविद्यालय,
पटना-800005

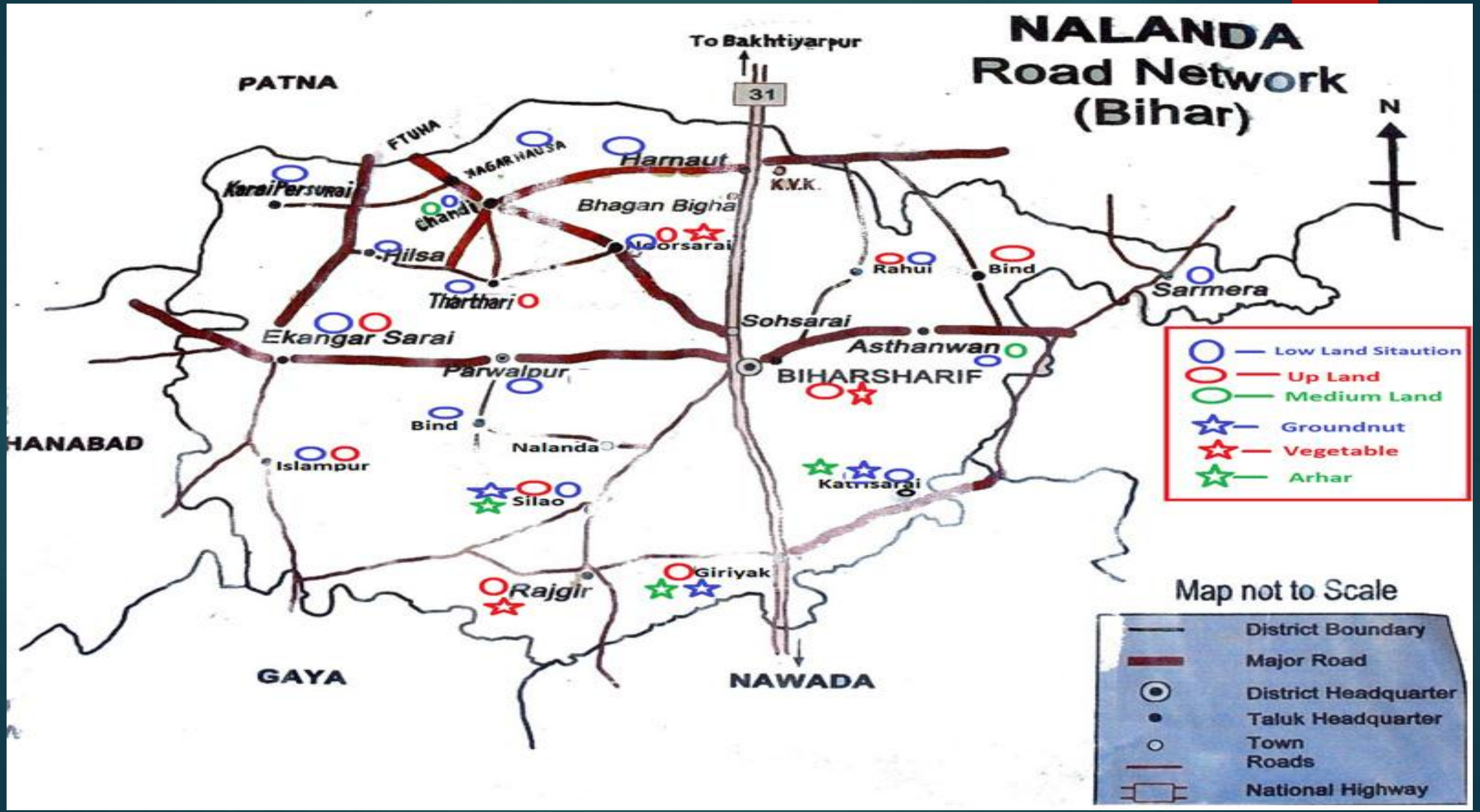
NALANDA
Road Network
(Bihar)
To Bakhtiyarpur
31
N
PATNA
FTUHA
NAGARNAUSA
Harnaut
K.V.K.
Karai Persurai
Chandi
Bhagan Bigha
Noorsarai
Hilsa
Rahui
Bind
Sarmera
Tharthari
Sohsarai
Ekangar Sarai
Asthanwan
Parwalpur
BIHARSHARIF
Bind
Nalanda
HANABAD
Islampur
Katrisarai
Silao
Giriyak
Rajgir
GAYA
NAWADA
Low Land Sitaution
Up Land
Medium Land
Groundnut
Vegetable
Arhar
Map not to Scale
District Boundary
Major Road
District Headquarter
Taluk Headquarter
Town
Roads
National Highway

- बौद्धकाल में भारत शिक्षा का केंद्र था। बौद्ध विश्वविद्यालय विक्रमशिला, तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय की ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। नालंदा विश्वविधालय के अतीत और उसके गौरवशाली इतिहास को सभी जानते हैं।
- तक्षशिला के बाद नालंदा विश्वविद्यालय की चर्चा होती है। बिहार की राजधानी पटना से करीब 120 किलोमीटर दक्षिण-उत्तर में प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। इस विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त काल के शासक कुमारगुप्त ने की थी। यहां इतनी किताबें रखी थीं कि जिन्हें गिन पाना आसान नहीं था। हर

- नालंदा संस्कृत शब्द नालम्+दा से बना है। संस्कृत में 'नालम्' का अर्थ 'कमल' होता है। कमल ज्ञान का प्रतीक है। नालम्+दा यानी कमल देने वाली, ज्ञान देने वाली। कालक्रम से यहां महाविहार की स्थापना के बाद इसका नाम 'नालंदा महाविहार' रखा गया।
- यह भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विश्वविख्यात केंद्र था। महायान बौद्ध धर्म के इस शिक्षा-केंद्र में हीनयान बौद्ध धर्म के साथ ही अन्य धर्मों के तथा अनेक देशों के

- **कहां है नालंदा :** नालंदा विश्वविद्यालय वर्तमान बिहार राज्य में पटना से 95 किलोमीटर, राजगीर से 12 किलोमीटर, बोधगया से 90 किलोमीटर (गया होकर), पावापुरी से 26 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस विश्वविद्यालय के खंडहरों को अलेक्जेंडर कनिंघम ने तलाशकर बाहर निकाला था जिसके जले हुए भग्नावशेष इसके प्राचीन वैभव की दास्तां बयां करते हैं।
- ह्वेनसांग के लेखों के आधार पर ही इन खंडहरों की पहचान नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में की गई थी। 7वीं शताब्दी में भारत आए

- **चीनी यात्री ह्वेनसांग :** जब ह्वेनसांग भारत आया था, उस समय नालंदा विश्वविद्यालय में 8,500 छात्र एवं 1,510 अध्यापक थे। अनेक पुराभिलेखों और 7वीं सदी में भारत भ्रमण के लिए आए चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा इत्सिंग के यात्रा विवरणों से इस विश्वविद्यालय के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 7वीं शताब्दी में यहां जीवन का महत्वपूर्ण 1 वर्ष एक

- **विश्वविद्यालय का स्थापना काल :** इस महान विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्तकालीन सम्राट कुमारगुप्त प्रथम ने 413-455 ईपू में की। इस विश्वविद्यालय को कुमारगुप्त के उत्तराधिकारियों का पूरा सहयोग और संरक्षण मिला। ह्नेनसांग के अनुसार 470 ई. में गुप्त सम्राट नरसिंह गुप्त

- **संरक्षण** : गुप्त वंश के पतन के बाद भी आने वाले सभी शासक वंशों ने इसके संरक्षण में अपना महत्वपूर्ण योगदान जारी रखा और बाद में इसे महान सम्राट हर्षवर्धन और पाल शासकों का भी संरक्षण मिला। स्थानीय शासकों तथा विदेशी शासकों से भी इस विश्वविद्यालय को अनुदान मिलता था।
- **नि:शुल्क पढ़ाई** : नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा, आवास, भोजन आदि का कोई शुल्क छात्रों से नहीं लिया जाता था। सभी सुविधाएं नि:शुल्क थीं। राजाओं और धनी सेठों द्वारा दिए गए दान से इस

- बौद्ध धर्म से इस शिक्षण संस्थान के प्रमुखता से जुडे होने के पश्चात भी यहां हिन्दू तथा जैन मतों से संबंधित अध्ययन कराए जाने के संकेत मिलते हैं, साथ ही साथ वेद, विज्ञान, खगोलशास्त्र, सांख्य, वास्तुकला, शिल्प, मूर्तिकला, व्याकरण, दर्शन, शल्यविद्या, ज्योतिष, योगशास्त्र तथा चिकित्साशास्त्र भी पाठ्यक्रम में शामिल थे। इससे पता चलता है कि बौद्ध शासन होने के बावजूद बौद्धों ने कभी

- अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था। इसका पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी। अभी तक खुदाई में 13 मठ मिले हैं। मठ एक से अधिक मंजिल के होते थे। मठों के सामने अनेक भव्य स्तूप और मंदिर थे। मंदिरों में बुद्ध भगवान की मूर्तियां स्थापित थीं।
- केंद्रीय विद्यालय में 7 बड़े कक्ष थे और इसके अलावा 300 अन्य कमरे थे। इनमें व्याख्यान हुआ करते थे। कमरे में सोने के लिए पत्थर की चौकी होती थी। दीपक, पुस्तक इत्यादि रखने के लिए आले बने हुए थे। प्रत्येक मठ के आंगन में एक कुआं बना था। 8 विशाल भवन, 10 मंदिर, अनेक प्रार्थना कक्ष तथा अध्ययन कक्ष

- **ये 3 प्रमुख पुस्तकालय थे-** रत्नोदधि, रत्नसागर और रत्नरंजक। एक पुस्तकालय भवन तो 9 तलों का हुआ करता था। इन पुस्तकालयों में हस्तलिखित हजारों पुस्तकें और छपी हुई लाखों किताबें थीं। कई दुर्लभ पुस्तकों का भंडार था।
- **छात्र और शिक्षक :** यह विश्व का प्रथम पूर्णत: आवासीय विश्वविद्यालय था और विकसित स्थिति में इसमें विद्यार्थियों की संख्या करीब 10,000 एवं अध्यापकों की संख्या 2,000 थी। नालंदा के प्रसिद्ध आचार्यों में शीलभद्र, धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति और स्थिरमति प्रमुख थे। 7वीं सदी में ह्वेनसांग के समय इस विश्वविद्यालय के प्रमुख शीलभद्र थे, जो एक

- **विश्वभर के छात्र पढ़ते थे :** इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं, बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, श्रीलंका, फारस, तुर्की और ग्रीक से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालंदा के विशिष्ट शिक्षाप्राप्त स्नातक बाहर जाकर बौद्ध धर्म के साथ ही अन्य ज्ञान का प्रचार करते थे।
- **सभी विषय पढ़ते थे छात्र :** नालंदा में बौद्ध धर्म के अतिरिक्त हेतुविद्या, शब्दविद्या, चिकित्साशास्त्र, अथर्ववेद तथा सांख्य से संबधित विषय भी पढ़ाए जाते थे। युवानच्वांग ने लिखा था कि नालंदा के एक सहस्र विद्वान आचार्यों में से 100 ऐसे थे, जो सूत्र और शास्त्र जानते थे तथा 500, तीन विषयों में पारंगत थे और 20, पचास विषयों में। केवल शीलभद्र ही ऐसे थे जिनकी सभी विषयों में समान गति थी।
- **छात्रों का चयन :** विद्यार्थियों का प्रवेश नालंदा विश्वविद्यालय में काफी कठिनाई से होता था, क्योंकि केवल उच्च कोटि के विद्यार्थियों को ही प्रविष्ट किया जाता था। इसके लिए बाकायदा परीक्षा ली जाती थी।

- इस विश्वविद्यालय की 4थी से 11वीं सदी तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति रही थी, लेकिन बख्तियार खिलजी नामक एक मुस्लिम तुर्क लुटेरे ने 1199 ईस्वी में इसे जलाकर नष्ट कर दिया। इस कांड में हजारों दुर्लभ पुस्तकें जलकर राख हो गईं। महत्वपूर्ण दस्तावेज नष्ट हो गए। कहा जाता है कि वहां इतनी

- कहते हैं कि कई अध्यापकों और बौद्ध भिक्षुओं ने अपने कपड़ों में छुपाकर कई दुर्लभ पांडुलिपियों को बचाया तथा उन्हें तिब्बत की ओर ले गए। कालांतर में इन्हीं ज्ञान-निधियों ने तिब्बत क्षेत्र को बौद्ध धर्म और ज्ञान के बड़े केंद्र में परिवर्तित कर दिया।
- आश्चर्य की बात यह है कि वह लुटेरा सिर्फ 200 घुड़सवारों के साथ आया था और नालंदा विश्वविद्यालय में उस समय कम से कम 20,000 छात्र पढ़ रहे थे। निहत्थे और अहिंसक बौद्ध भिक्षुओं ने कभी यह कल्पना भी नहीं कि थी कि इस विश्वविद्यालय को

111 C

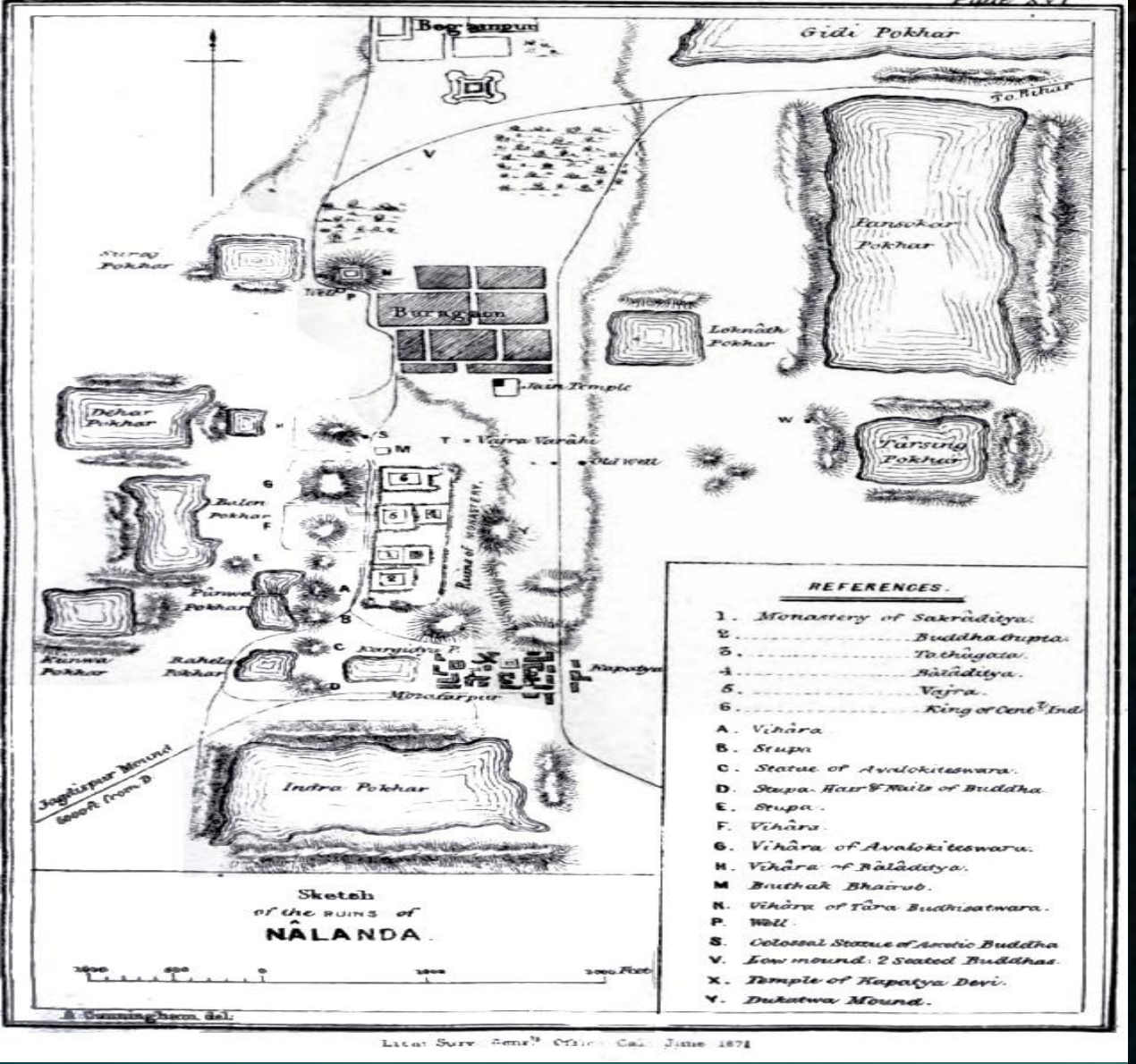

A map of Nalanda and its environs from Alexander Cunningham's 1861–62 ASI report which shows a number of ponds (*pokhar*) around the Mahavihara.

Replica of the seal of Nalanda set in terracotta on display in the Archaeological Survey of India Museum in Nalanda

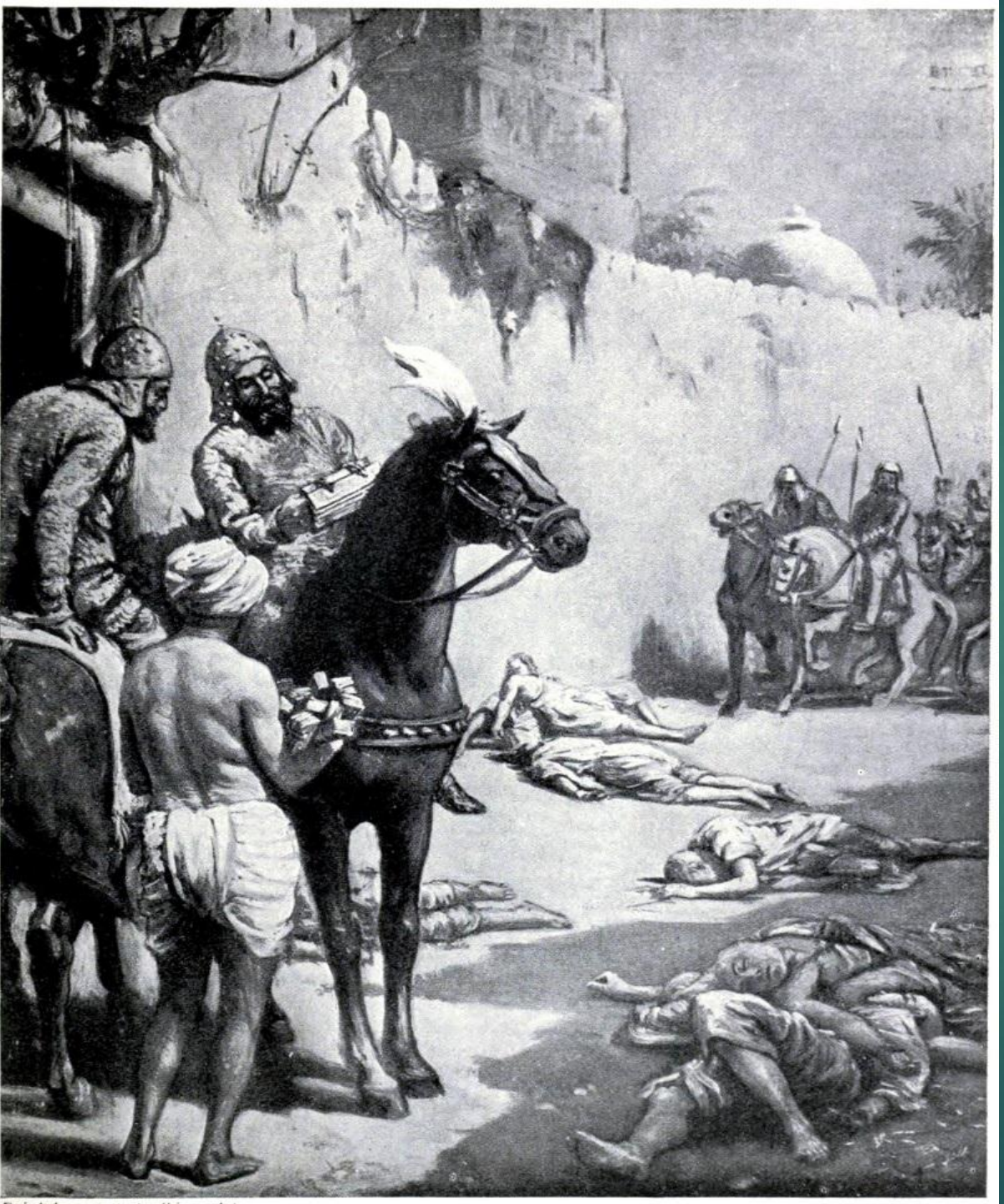

The image, in the chapter on India in *Hutchison's Story of the Nations* edited by James Meston, depicts the Muslim Turkic general Bakhtiyar Khalji's massacre of Buddhist monks in Bihar, India. Khaliji destroyed the Nalanda and Vikramshila universities during his raids across North Indian plains, massacring many Buddhist and

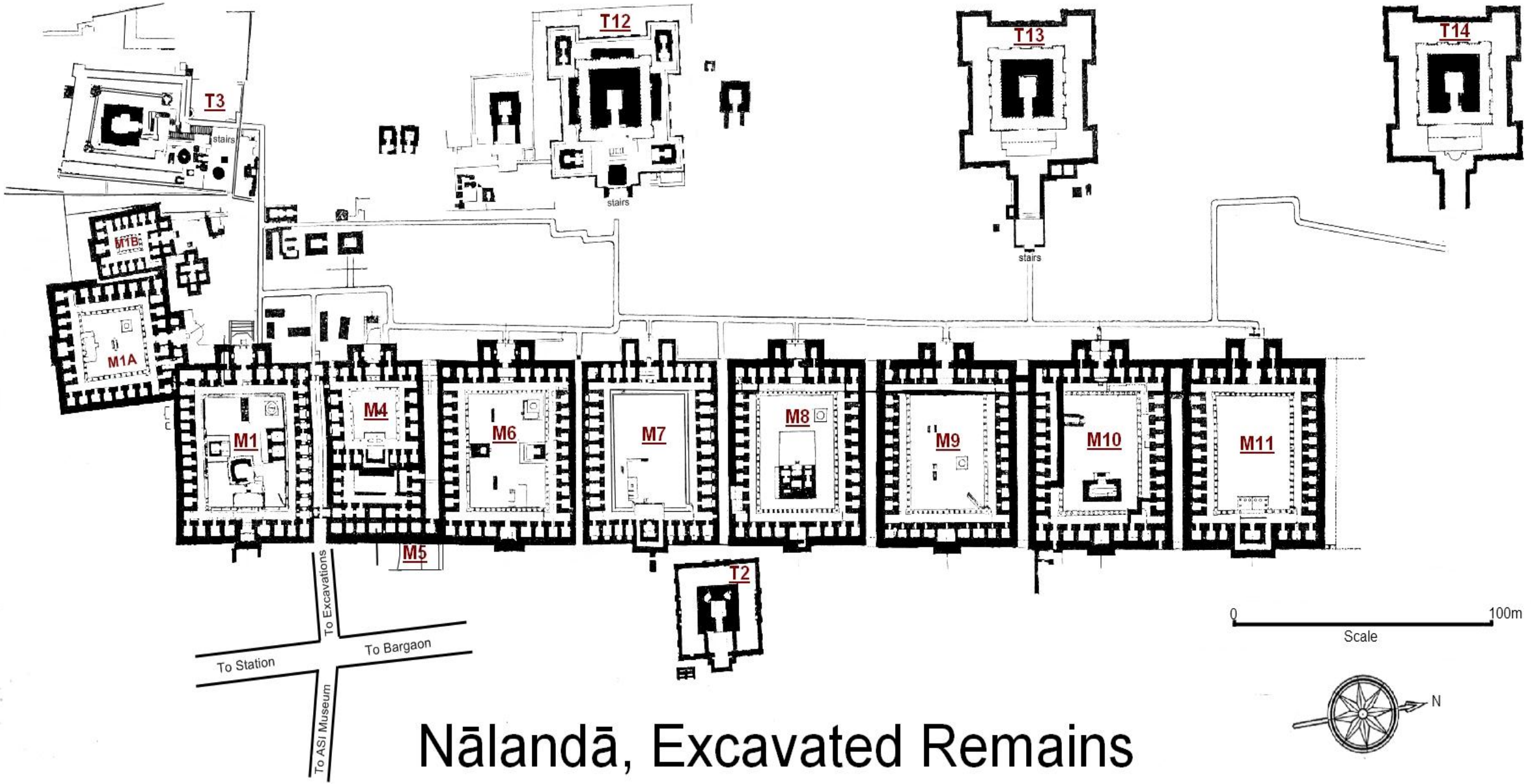

Nālandā, Excavated Remains